अमर उजाला

नई दिल्ली । शुक्रवार, 14 जून 2019

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

खुशी के क्षणों को कैद कर लो, प्रेम करो और प्रेम करने दो ! इस दुनिया में यही एक वास्तविकता है, बाकी सब मूर्खता है।
- लियो टॉलस्टॉय

रूसी लेखक

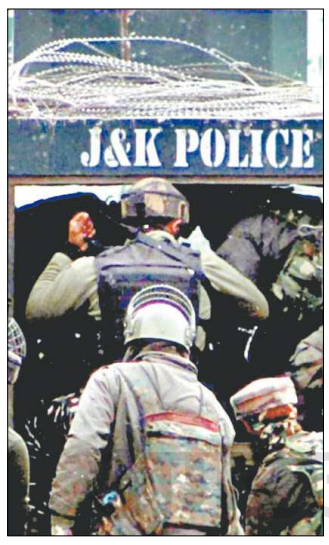

अनंतनाग में हुआ आतंकी हमला स्मरण पत्र की तरह है कि पाक परस्त आतंकी गुट बेखौफ हैं, ऐसे में पाकिस्तान को अलग-थलग करने की रणनीति के साथ ही जरूरी यह भी है कि स्थानीय युवाओं का भरोसा जीतकर उन्हें मुख्यधारा से जोड़ा जाए।

अमन की तलाश

दक्षिण कश्मीर के अनंतनाग में बुधवार की शाम व्यस्त इलाके में सीआरपीएफ पर किया गया आतंकी हमला चार महीने पहले 14 फरवरी को पुलवामा में सुरक्षा बलों के काफिले पर हुए फिदायीन हमले के बाद सबसे बड़ा और मोदी सरकार के सत्ता में दोबारा आने के बाद पहला आतंकी हमला है। केंद्र सरकार के लिए यह हमला एक स्मरण पत्र की तरह है कि पुलवामा में हुए हमले-जिसमें सीआरपीएफ के 40 जवान शहीद हो गए थे- के बाद सीमा पार बालाकोट में हवाई हमले के जरिये आतंकी शिविर को ध्वस्त किए जाने के बावजूद पाक परस्त आतंकी गुट बेखौफ हैं। इस ताजा हमले को दो आतंकियों ने अंजाम दिया, जिसमें सीआरपीएफ के पांच जवान शहीद हुए हैं और एक आतंकी भी मारा गया है। हमले की जिम्मेदारी जिस अल उमर मुजाहिदीन ने ली है, उसे मसूद अजहर के आतंकी संगठन जैश-ए- मोहम्मद से जुड़ा हुआ बताया जाता है, ऐसे में साफ है कि पाकिस्तान तमाम दावों के बावजूद भारत के खिलाफ हिंसा को अंजाम देने वाले आतंकी संगठनों को लगातार संरक्षण दे रहा है। इस हमले का असर ब्रिश्केक में हो रही शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक पर पड़ सकता है, जहां अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के खिलाफ भारत के पक्ष को व्यापक समर्थन मिल सकता है। ध्यान रहे, इस सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ ही पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान भी होंगे, लेकिन भारत ने किसी तरह की द्विपक्षीय वार्ता से इनकार कर रखा है। आतंकवाद के मुद्दे पर पाकिस्तान के खिलाफ भारत ने हाल के समय में कूटनीतिक सफलता हासिल की है और उसकी दबाव की रणनीति काम कर रही है। इसके बावजूद यह भी सच है कि जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद से निपटने के लिए स्थानीय युवाओं को मुख्यधारा से जोड़ने के प्रयास भी होने चाहिए। राज्यपाल सत्यपाल मलिक ने अपने एक साल के शासन का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हुए आतंकी गुटों से प्रेरित स्थानीय युवाओं से अपील की है कि वे हथियार डालकर राजभवन में उनके साथ भोजन करने आएं। उनका यह भी कहना है कि संविधान के दायरे में वह उनसे बात करने के लिए तैयार हैं। यह एक अच्छी पेशकश है, क्योंकि कोई भी रास्ता शांतिपूर्ण बातचीत से ही निकल सकता है; मगर इसके लिए व्यापक स्तर पर विश्वास बहाली की जरूरत होगी।

नई सरकार की कार्यसूची

उच्च बेरोजगारी, जीडीपी और औद्योगिक विकास की घटती दर, किसानों का संकट, ऑटोमोबाइल उद्योग में घटती बिक्री-ये कुछ ऐसे संकेत हैं, जो बताते हैं कि अर्थव्यवस्था की स्थिति कोई बहुत अच्छी नहीं है।

नारायण कृष्णमूर्ति, वरिष्ठ पत्रकार

वर्ष 2018-19 के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास दर के 7.2 फीसदी रहने का पूर्वानुमान लगाया गया था, जो इस वर्ष की शुरुआत में घटकर सात फीसदी रह गई, जो वास्तव में 6.5 फीसदी हो सकती है। लेकिन प्रचंड बहुमत के साथ जीतकर सत्ता में आई सरकार के लिए जीडीपी का आंकड़ा बहुत बड़ा मुद्दा नहीं है। अब चुनावी जीत का उत्साह खत्म हो गया है और देश की पहली पूर्णकालिक महिला वित्त मंत्री का शोर थम गया है। वास्तविकता का सामना करने और अच्छे दिन तथा सबका विकास का लक्ष्य हासिल करने के लिए चुनौतियों से निपटने का समय आ गया है। आखिरकार कॉरपोरेट भारत जाग गया है और उसने माना है कि हम मंदी जैसी स्थिति का सामना कर रहे हैं और विकास का संकट है, जो समग्र अर्थव्यवस्था और आम आदमी पर असर डाल रहा है। यह कहना गलत नहीं होगा कि पिछले कुछ वर्षों में भारत में निवेश का अकाल रहा है और जो भी विकास देखा जा रहा है, वह ज्यादातर भारतीयों द्वारा खपत के कारण है। लेकिन अब उपभोक्ता मांग में गिरावट और सरकारी खर्चे में कमी के कारण चिंता की स्थिति पैदा हो गई है। ऑटोमोबाइल बिक्री, रेल माल ढुलाई, पेट्रोलियम उत्पाद की खपत, घरेलू हवाई यातायात और आयात के आंकड़े खपत में मंदी का संकेत देते हैं, विशेष रूप से निजी खपत में। फिर भी जीएसटी संग्रह नियमित है और अगर कोई गिरावट है, तो वह मामूली है।

अब जबकि कुछ ही हफ्ते बाद इस सरकार का पहला बजट पेश होगा, वित्त मंत्री सुस्त पड़ी अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने और इसे रफ्तार देने के लिए उद्योग जगत के प्रतिनिधियों से मुलाकात कर रही हैं। इससे पहले कि निर्मला सीतारमण अपना काम शुरू करतीं, निवेश व विकास तथा रोजगार व कौशल विकास पर दो अगल-अलग कैबिनेट कमेटियों का गठन धीमी अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने तथा अधिक रोजगार पैदा करने के लिए किया गया है, जो अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने में भी भूमिका निभाएंगी। हालांकि संख्याबल अधिक होने के बावजूद इस सरकार से किसी बड़े सुधार की उम्मीद नहीं है, इसके बजाय इसका ध्यान अपने पहले कार्यकाल के कामकाज को निरंतरता देने और जिन क्षेत्रों में सुधार की गुंजाइश है, वहां सुधार करने की तरफ होगा।

राजकोषीय समझदारी- व्यक्तिगत करदाताओं और कॉरपोरेट संस्थाओं, दोनों के लिए कर कटौती और रियायतों पर बहुत शोर मचा हुआ है। हालांकि कर दर में कटौती जैसे नीतिगत उपायों को छोड़कर, ताकि खर्च करने के लिए आम आदमी के हाथों में थोड़ा ज्यादा पैसे दिए जा सकें, बजट में बहुत गुंजाइश नहीं है। सार्वजनिक खर्च को बढ़ावा देने के लिए सरकार के खजाने में बहुत पैसा नहीं है, क्योंकि वित्त वर्ष 2019 में राजकोषीय घाटे ने जीडीपी के 3.4 फीसदी को छू लिया और राजस्व के मद में सरकार की प्राप्ति लक्ष्य से कम रही है। सरकारी खर्च बढ़ाने के प्रयास से मुद्रास्फीति बढ़ सकती है। एक तरीका यह है कि रिजर्व बैंक के रिजर्व को कम कर बाजार में तरलता बढ़ाई जाए, जिसका अध्ययन बिमल जालान समिति कर रही है। सरकारी राजस्व को बढ़ावा देने का एक अन्य तरीका सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) का विनिवेश और राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों से लाभांश जैसे गैर-कर राजस्व को हासिल करना है। ऐसा करना आसान नहीं है, लेकिन ये ऐसे कदम हैं, जिनसे बहुत सारी तात्कालिक चिंताओं का समाधान हो सकता है। खासकर विनिवेश बहुत फायदेमंद है, जिससे सरकार का रूपांतरण एक कार्यक्षमता वाली टीम के रूप में हो सकता है। एयर इंडिया के विनिवेश और भारतीय रेलवे के पूंजीकरण फायदेमंद कदम हो सकते हैं।

बैंकिंग क्षेत्र में सुधार- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक भारतीय बैंकिंग उद्योग का लगभग 75 फीसदी हिस्सा हैं और इस पर तत्काल ध्यान देने की जरूरत है। खराब ऋणों के बढ़ते बोझ ने उनकी उधार देने की क्षमता पर असर डाला है, क्योंकि अलाभकारी परियोजनाओं को कर्ज देने के बाद उनकी अधिकांश पूंजी खत्म हो गई है। इसके अलावा कई बैंक तब तक उधार नहीं दे सकते, जब तक उनकी परिसंपत्ति की गुणवत्ता में सुधार नहीं होता या एनपीए काफी कम नहीं हो जाता। सरकार को तत्काल सार्वजनिक बैंकों में पूंजी डालने की जरूरत है, ताकि कॉरपोरेट लोन लेने के साथ आर्थिक पुनरुद्धार के लिए ऋण देना शुरू किया जा सके। सार्वजनिक उपक्रमों से संबद्ध एक उद्योग जो चुनौतियों का सामना कर रहा है, वे हैं एनबीएफसी यानी गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियां, जो तरलता के संकट का सामना कर रही हैं। खासकर आईएल ऐंड एफएस जैसी बुनियादी ढांचा कंपनी और डीएचएफएल जैसी ऋणदाता कंपनी के डिफॉल्ट होने के बाद से, यह क्षेत्र कठिन स्थितियों का सामना कर रहा है। इस क्षेत्र में भी तत्काल तरलता की जरूरत है, अन्यथा कई ऑपरेशन निवेशकों की भावना को प्रभावित कर सकते हैं। चूंकि एनबीएफसीज छोटे और मध्यम उद्यमों के लिए सबसे बड़े ऋणदाता हैं, इसलिए उनका अस्तित्व और मजबूती महत्वपूर्ण है।

जीएसटी का सरलीकरण- जीएसटी पर अब भी काम चल रहा है और इस बार सरकार के पास इस कर व्यवस्था को सुचारू बनाने का समय है। इस दिशा में पहला कदम जीएसटी फाइलिंग प्रक्रिया को सरल बनाना और कई कर ढांचे को कम करना होगा। जीएसटी को कुशल और आसान बनाकर सरकार असंगठित क्षेत्र के अधिक व्यवसायियों को औपचारिक अर्थव्यवस्था में प्रवेश करने और कर दायरे में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करेगी। कुछ अन्य मुद्दे, जैसे कि राज्य के स्वामित्व वाली सामान्य बीमा कंपनियों के विलय का मुद्दा लंबे समय से लंबित है। विलय से इन संस्थानों में दक्षता आएगी। प्रत्यक्ष कर संहिता पर फिर से विचार करके आयकर को सरल बनाने पर भी चर्चा हो रही है। ये ऐसे क्षेत्र हैं, जो अर्थव्यवस्था को फिर से गति दे सकते हैं और विकास में तेजी ला सकते हैं। सामूहिक कदम से देश में अधिक पारदर्शी और कर अनुपालन व्यवस्था सुनिश्चित होगी। ये सरकार के लिए कार्यसूची है, जिनमें से अधिकांश को अगर सरकार अपने कार्यकाल के पहले दो वर्षों में निपटाती है, तो न केवल सरकार का कामकाज सुचारू होगा, बल्कि इसका असर 2024 के चुनाव में भी दिखेगा।

अंतर्ध्वनि

>> निर्मल वर्मा

भारतीय परंपरा में मनुष्य की आत्मचेतना ही उसका स्वधर्म है

मनुष्य का 'मनुष्यत्व' क्या है, यह सिर्फ एक दार्शनिक प्रश्न नहीं रहता, बल्कि उन मूल प्रेरक-शक्तियों की ओर संकेत करता है, जो किसी महाकाव्य के नायकों-इलियड में अगमिमनॉन, महाभारत में अर्जुन, वाल्मीकि रामायण में राम के निर्णयों को संचालित करती है। इन कृतियों में मनुष्य की छवि कैसी उभरकर आती है, यह इस पर निर्भर करता है कि मनुष्य अपने 'आत्म' को केवल दूसरे मनुष्यों से नहीं, बल्कि बाहरी शक्तियों से कैसे जोड़ पाता है... ! भारतीय परंपरा में मनुष्य का 'आत्म' उसके अहं (इगो) की तुलना में बहुत बृहत्तर है, जो अपने को जीव-जगत की समस्त सत्ताओं से अंतर्संबंधित पाता है। हर व्यक्ति, अच्छा हो या बुरा, उच्च जाति का हो या निम्न जाति का, राजा हो या प्रजा का साधारण सदस्य-दायित्वों की पूरी शृंखला में बंधा है। वह उस तरह से निजी संकल्प का वाहक नहीं है, जैसे यूरोपीय परंपरा में 'व्यक्ति' की अवधारणा है- अपेक्षाकृत स्वायत्त प्राणी, जो दूसरों के बीच रहता हुआ भी अपना निज सुरक्षित रखता है...एक अहंकेंद्रित जीवात्मा, जो दूसरों से संबंधित होती हुई भी अपने को कहीं बहुत अधूरी और अरक्षित पाती है। पूर्वी संस्कृतियों में मनुष्य को यदि पृथ्वी और प्रकृति की जीव-सत्ताओं से 'ऊपर' माना गया, तो वह उसकी स्व-चेतना के आधार पर, जो उसे समूची सृष्टि में एक विशिष्ट दर्जा देती है। मनुष्य की आत्म-चेतना ही उसका स्वधर्म बन जाती है, ताकि वह प्राकृतिक जगत की चर-अचर सत्ताओं के प्रति अपना दायित्व संपन्न कर सके। पश्चिमी परंपरा में 'संस्कृति' का आविर्भाव ही 'आदिम' शक्तियों को अपदस्थ करने में होता है। प्रकृति की बीहड़ अराजकता और मनुष्य के भीतर दबी आदिम प्रवृत्तियों के बीच अद्‌भुत समानता दिखाई देती है। प्रकृति उपभोग की वस्तु न होकर एक आंतरिक पवित्रता प्राप्त कर लेती है, जो भारतीय काव्य-परंपरा का प्रमुख लक्षण है।

-दिवंगत हिंदी साहित्यकार

मंजिलें और भी हैं

>> किरण वर्मा

रक्त की कालाबाजारी रोकने के लिए बनाया ऐप

देश में खून की जरूरत के मुकाबले इसकी उपलब्धता कम है। यदि रक्तदाता की संख्या थोड़ी भी बढ़ जाती है, तो देश में खून से संबंधित सभी जरूरतें पूरी हो सकती हैं। मैं दिल्ली का रहने वाला हूं। मैं सात साल का था, जब कैंसर की वजह से मेरी मां की मौत हो गई। उस वक्त मैं अकेला पड़ गया, लेकिन मन में समाज के लिए कुछ अच्छा करने की इच्छा जगी। फिर एक बार किडनी की बीमारी से ग्रस्त स्कूल टीचर को रक्त की आवश्यकता पड़ी तो, मैंने यह सोचकर रक्त दे दिया कि आंतरिक परीक्षा में मुझे अच्छे नंबर मिल जाएंगे। लेकिन रक्तदान के बाद बाहर निकला, तो उनका परिवार भावुक हो गया। इसके बाद मैं वर्ष में चार बार, दोस्त, भाई, और बहन के जन्मदिन के साथ ही अपने जन्मदिन पर रक्तदान करने लगा।

आर्थिक रूप से संपन्न लोग रक्त का इंतजाम कर लेते हैं, लेकिन गरीबों के लिए यह मुश्किल होता है। यह सोचकर मैं हमेशा सरकारी अस्पताल में रक्तदान करता था। मैं अस्पताल में ब्लड बैंक के बाहर खड़ा रहता था, जिसे जरूरत होती थी, उससे पूछ कर रक्तदान कर देता था। इसके चलते कई लोगों ने मेरा मोबाइल नंबर ले लिया, ताकि जरूरत होने पर फोन कर सकें। इसी दौरान दिसंबर 2016 में एक फोन आया, मुझे बताया गया कि दिल्ली के एक सरकारी अस्पताल में छत्तीसगढ़ के एक गरीब को रक्त की आवश्यकता है। मैंने वहां पहुंचकर रक्तदान कर दिया। फिर अचानक सोचा कि जिसके लिए रक्तदान किया है, उससे मिल भी लूं। जब मैं उनके पास पहुंचा तो पता चला कि एक महिला अपना सब कुछ बेच कर पति का इलाज करा रही है, और जो ब्लड मैंने डोनेट किया, वह किसी दलाल के जरिये उसने खरीदा है, मेरे पास जो कॉल आई थी, वह किसी एजेंट की थी। मैं बहुत परेशान हो गया, क्योंकि मैंने रक्तदान उस महिला की सहायता के लिए किया था, पैसे के लिए नहीं। मैंने अपने स्तर से इसके खिलाफ आवाज उठाने का प्रयास किया, लेकिन कोई असर नहीं हुआ। यह मेरी जिंदगी का अहम मोड़ था। मैं मार्केटिंग की नौकरी कर रहा था। उसी दिन मैंने सोचा कि इस कालाबाजारी से लोगों को निजात दिलाने के लिए कुछ करना चाहिए। मैंने अपनी नौकरी छोड़ने और रक्तदान के लिए एक ऐसा प्लेटफॉर्म बनाने का फैसला किया, जहां पूरी पारदर्शिता के साथ रक्तदान किया जा सके। चूंकि मैं एक मध्यमवर्गीय परिवार से हूं, ऐसे में घर का खर्च चलाने के लिए नौकरी प्रमुख सहारा थी। मेरे परिवार के लोग इस फैसले के खिलाफ थे। जनवरी 2017 में मैंने *सिंपली ब्लड ऐप* लांच किया। इस बीच मेरे चाचा को जो कैंसर की बीमारी से जूझ रहे थे, रक्त की आवश्यकता पड़ी, डॉक्टर ने यहां तक बोल दिया कि रक्त न मिलने के चलते कुछ घंटों में इनकी जान जा सकती है। मैंने *सिंपली ब्लड ऐप* से मदद ली, रक्त चढ़ाने के बाद करीब एक महीने तक वह जीवित रहे। इसके बाद मेरे काम को लेकर मेरे घरवालों के विचार बदल गए, और उन्होंने मेरा सहयोग करना शुरू कर दिया। आज इसे दर्जनों देशों में 10 हजार से ज्यादा लोग डाउनलोड कर चुके हैं। यह ऐसा मंच है, जहां रक्तदाता अपनी सुविधानुसार जरूरतमंद के लिए रक्तदान कर सकता है। अब तक लगभग 50 हजार लोगों को इसके माध्यम से रक्त दिया जा चुका है। मुझे अक्सर ईमेल, मैसेज और फोन के माध्यम से लोग बताते हैं कि उन्हें इससे सहयोग मिला है, जिससे बहुत खुशी मिलती है। जब आप रक्तदान करते हैं, तो जिसको वह रक्त चढ़ाया जाता है, उससे आपका इंसानियत का रिश्ता जुड़ जाता है। रक्त का कोई धर्म, जाति, राजनीति और संप्रदाय नहीं होता है।

यह एक ऐसा मंच है जहां रक्तदाता अपनी सुविधानुसार किसी को भी रक्तदान कर सकता है।

सुलभ स्वास्थ्य सेवा की मंजिल

अपने देश में इलाज पर खर्च करने के कारण हर साल 6.4 करोड़ लोग गरीब की श्रेणी में आ जाते हैं। ऐसे में, किफायती स्वास्थ्य सेवा का वादा स्वाभाविक लगता है। पर इसके लिए पहले बुनियादी सुविधाओं की खाई पाटने की जरूरत है।

इस साल चुनावी घोषणापत्र में स्वास्थ्य सेवा को जगह मिली। स्वास्थ्य सेवा पर सरकारी खर्च को सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के तीन प्रतिशत तक बढ़ाने, भविष्य के 1,50,000 'वेलनेस सेंटर्स' की सुविधाओं को उन्नत करने से लेकर स्वास्थ्य सेवा का अधिकार जैसे अनेक वादे किए गए। पर अब भी देश के सामने अनेक ढांचागत चुनौतियां हैं। भारत दुनिया के उन देशों में है, जहां चिकित्सक-रोगी अनुपात सबसे खराब यानी 1:11.082 मात्र है। स्वास्थ्य सेवा सुलभता और गुणवत्ता सूचकांक, 2018 में भारत 145वें स्थान पर है, जो पड़ोसी बांग्लादेश, उप-सहारा सूडान और भूमध्यरेखीय गिनी से भी नीचे है।

चुनावी वादे को यथार्थ में परिणत करने के लिए स्वास्थ्य सेवा की मौजूदा अवसंरचना में संपूर्ण सुधार की जरूरत है। अधिक संख्या में अस्पतालों, चिकित्सकों और चिकित्सीय परिचारकों से लेकर और अधिक चिकित्सा संस्थानों के निर्माण की दिशा में एक अधिक सुदृढ़ सरकारी-निजी क्षेत्र भागीदारी (पीपीपी) तक मौजूदा चिकित्सीय अवसंरचना में गुणवत्ता, सुलभता और वहनीयता जैसे सभी पहलुओं में सुधारों की भारी आवश्यकता है।

पिछले वर्ष सरकार ने स्वास्थ्य सेवा सुधारने, मरीजों की जेब से खर्च कम करने और स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच आसान करने के लिए विश्व की सबसे बड़ी बीमा योजना, आयुष्मान भारत लागू की। लेकिन क्या 6,400 करोड़ रुपये की निधि लाखों लोगों के इलाज के लिए पर्याप्त है? रिपोर्टें बताती हैं कि इसके सफल क्रियान्वयन के लिए कम-से-कम 1,00,000 करोड़ रुपये की जरूरत है। छत्तीसगढ़ का उदाहरण सामने है। सीएजी की एक रिपोर्ट के अनुसार, चिकित्सीय अवसंरचना के मामले में छत्तीसगढ़ का प्रदर्शन सबसे खराब है। वर्ष 2012 से 2017 तक वहां विशेषज्ञ चिकित्सकों की 89 प्रतिशत, चिकित्सा अधिकारियों की 36 फीसदी, स्टाफ नर्स की 34 प्रतिशत और पराचिकित्सा कर्मियों की 12 फीसदी कमी थी। इसका जिला अस्पतालों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों द्वारा स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने पर असर पड़ता है। दूसरे राज्यों में भी यही स्थिति है। अगर अस्पताल दूर हो, चिकित्सकों, आवश्यक दवाओं और उपकरणों का अभाव हो, विद्युत आपूर्ति दुर्दशाग्रस्त हो, तो केवल आयुष्मान भारत द्वारा सूचीबद्ध बीमा सुरक्षा के प्रावधानों से मरीजों को कोई लाभ नहीं होगा।

स्वास्थ्य के लिए उपलब्ध मानव संसाधनों को प्रभावशाली बनाने के लिए इन बिंदुओं पर विचार करना जरूरी है-क्या उपलब्ध चिकित्साकर्मियों के पास अपेक्षित योग्यताएं हैं? क्या उनके पास आवश्यक उपकरण, औषधियां और अन्य सामग्रियां उपलब्ध हैं? क्या स्वास्थ्यकर्मियों को उच्च गुणवत्तापूर्ण सेवा देने में आसानी हो रही है? भारत जैसे देश में, जहां अपनी जेब से इलाज पर खर्च करने के कारण हर साल 6.4 करोड़ लोग गरीब की श्रेणी में आ जाते हैं, वहां किफायती स्वास्थ्य सेवा का वादा स्वाभाविक लगता है, लेकिन सुलभ स्वास्थ्य सेवा की मंजिल अब भी बहुत दूर है। किफायती स्वास्थ्य सेवा का रास्ता खोलने से पहले बुनियादी सुविधाओं की खाई पाटने की जरूरत है।

सरकार और अन्य निजी संगठनों के साथ साझेदारी खड़ी करना आवश्यक है। इस पीपीपी मॉडल से मौजूदा चिकित्सा संस्थानों, चिकित्सकों, रहनुमाओं आदि की क्षमता बढ़ाने में मदद मिलेगी। क्षमता निर्माण के सहारे हम गुणवत्ता और नवाचार पर फोकस करते हुए स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ा सकते हैं।

डॉ. संजीव कुमार

-निदेशक, इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ मैनेजमेंट रिसर्च।

खुली खिड़की

पुरुष टेनिस ग्रैंड स्लैम चैंपियनशिप विजेता

दुनिया के कई देशों में टेनिस पसंदीदा खेल है। प्रतिवर्ष इसके चार बड़े टूर्नामेंट होते हैं जिन्हें ग्रैंड स्लैम कहा जाता है। जनवरी में ऑस्ट्रेलियन ओपन, मई में फ्रेंच ओपन, जून में विंबलडन और अगस्त में अमेरिकी ओपन टूर्नामेंट होते हैं। जनवरी, 2019 में आई रिपोर्ट के मुताबिक सबसे ज्यादा पुरुष टूर्नामेंट जीतने का खिताब रोजर फेडरर के नाम है।

स्रोत : स्टैटिस्टा

हरियाली और रास्ता

काजल, पिता और सर्कस

काजल की कहानी, जो सर्कस देखना चाहती थी, पर उसके बजाय वह एक अद्‌भुत अनुभव की साक्षी बनी।

काजल सातवीं कक्षा में पढ़ती थी। उसके पिता चीनी मिल में इंजीनियर थे। उन्हें अपनी बेटी के साथ रहने का कम ही समय मिल पाता था। उस दिन रविवार था और शहर में सर्कस लगा था। काजल ने सर्कस कभी नहीं देखा था। वह कई दिनों से पिता से सर्कस दिखाने के लिए कह रही थी। इत्तफाक से उस दिन काजल के पिता के पास भी समय था। दोनों शहर के लिए निकले। सर्कस के पास काफी भीड़ थी। काजल के पिता गाड़ी पार्किंग में खड़ी कर टिकट की लाइन में खड़े हो गए। उनके आगे एक बड़ा परिवार था, जिनमें पति, पत्नी और आठ बच्चे थे। बच्चे सर्कस देखने के लिए काफी उत्साहित थे। उनकी बातों से लग रहा था कि शायद वे भी पहली बार सर्कस देखने आए थे। आखिरकार टिकट खिड़की पर उनकी बारी आ गई। बच्चों के पिता ने कहा, 'आठ बच्चे, और दो बड़े।' खिड़की पर बैठे शख्स ने पैसे बताए। पैसे सुनते ही उन बच्चों की माता ने पिता का हाथ छोड़ दिया। वह परेशान अपने पति की तरफ देखने लगीं। पिता ने एक बार फिर से, लेकिन इस बार थोड़ी मायूस आवाज में पूछा, 'जी कितना बताया?' एक बार फिर काउंटर पर बैठे शख्स ने उसे पैसे बताए। पिता का मुंह उतर गया। वह पलटकर अपने बच्चों की तरफ देखने लगा और सोचने लगा कि उन्हें कैसे बताए कि उनके पास पैसे कम हैं। काजल के पिता ने काजल की तरफ देखा और धीरे से सौ रुपये का नोट जमीन पर गिरा दिया। फिर वह बच्चों के पिता से बोले, 'शायद आपके कुछ पैसे गिर गए हैं।' वह समझ गए। उन्होंने वह नोट उठाया और उनकी तरफ रुआंसी आंखों से देखते हुए बोले, 'शुक्रिया।' काजल और उसके पिता मुस्कराते हुए वापस अपनी गाड़ी की तरफ लौट गए। काजल सर्कस तो नहीं देख पाई, लेकिन जो उसने देखा, वह उसके जीवन की अब तक की सबसे बड़ी सीख थी।

खुशियां दूसरों के साथ बांटने से और बढ़ जाती हैं।

फल की चिंता मत करो

सत्संग

राजा शुद्धोधन एक बार राज्य भ्रमण करने के लिए निकले। रास्ते में उन्होंने एक बेहद वृद्ध व्यक्ति को पौधारोपण करते हुए देखा। उन्हें यह देखकर बहुत अजीब लगा कि यह आदमी इतना वृद्ध होने के बावजूद पौधा लगा रहा है। जबकि उसके जीवन की कोई गारंटी नहीं है कि वह और कितने साल जिएगा। वृद्ध के पास जाकर उन्होंने पूछा,'आप यह पौधा क्यों लगा रहे हैं? क्या इसमें फल आने तक आप जीवित रहेंगे?' वृद्ध ने विनम्रता के साथ जवाब दिया,'नहीं महाराज। जब तक यह पौधा बड़ा होकर पेड़ बनेगा और फल देगा, तब तक शायद मैं इस दुनिया में नहीं रहूंगा। लेकिन उससे क्या फर्क पड़ता है! हमारी आने वाली पीढ़ी को इसके स्वादिष्ट फलों का स्वाद मिलेगा। ठीक उसी तरह, जैसे आज हम अपने पूर्वजों के लगाए गए फलों का स्वाद ले रहे हैं और उनको धन्यवाद भी दे रहे हैं। वैसे भी मनुष्य भगवान के घर से न कुछ लेकर आता है और न ही कुछ साथ ले जाता है। अगर इस दुनिया में कुछ शेष रहता है, तो वह है अच्छे कर्म। इसलिए मैं स्नेह के साथ यह पौधा लगा रहा हूं, ताकि मेरे जाने के बाद मुझे इसकी वजह से याद किया जाए। वृद्ध के विचार सुनकर राजा शुद्धोधन बेहद प्रभावित हुए और बोले, 'बाबा, आपकी यह बात हमारे लिए भी संदेश है। अब मैं भी आपके रास्ते पर चलूंगा। वह वृद्ध को धन्यवाद देकर आगे बढ़ गए।

-संकलित